संगीतमय गधा-पंचतंत्र

एक धोबी का गधा था। गधे का नाम था--उद्धत। वह दिन भर कपडों के गट्ठर इधर से उधर ढोने में लगा रहता। धोबी स्वयं कंजूस और निर्दयी था। अपने गधे के लिए चारे का प्रबंध नहीं करता था। बस रात को चरने के लिए खुला छोड देता। निकट में कोई चरागाह भी नहीं थी। शरीर से गधा बहुत दुर्बल हो गया था।

एक रात उस गधे की मुलाकात एक गीदड़ से हुई। गीदड़ ने उससे पूछा 'कहिए महाशय, आप इतने कमज़ोर क्यों हैं?'

गधे ने दुखी स्वर में बताया कि कैसे उसे दिन भर काम करना पडता है। खाने को कुछ नहीं दिया जाता। रात को अंधेरे में इधर-उधर मुंह मारना पडता है।

गीदड़ बोला 'तो समझो अब आपकी भुखमरी के दिन गए। यहां पास में ही एक बडा सब्जियों का बाग़ है। वहां तरह-तरह की सब्जियां उगी हुई हैं। खीरे, ककडियां, तोरई, गाजर, मूली, शलजम और बैंगनों की बहार है। मैंने बाग तोडकर एक जगह अंदर घुसने का गुप्त मार्ग बना रखा है। बस वहां से हर रात अंदर घुसकर छककर खाता हूं और सेहत बना रहा हूं। तुम भी मेरे साथ आया करो।' लार टपकाता गधा गीदड के साथ हो गया।

बाग में घुसकर गधे ने महीनों के बाद पहली बार भरपेट खाना खाया। दोनों रात भर बाग में ही रहे और पौ फटने से पहले गीदड जंगल की ओर चला गया और गधा अपने धोबी के पास आ गया।

उसके बाद वे रोज रात को एक जगह मिलते। बाग में घुसते और जी भरकर खाते। धीरे-धीरे गधे का शरीर भरने लगा। उसके बालों में चमक आने लगी और चाल में मस्ती आ गई। वह भुखमरी के दिन बिल्कुल भूल गया। एक रात खूब खाने के बाद गधे की तबीयत अच्छी तरह हरी हो गई। वह झूमने लगा और अपना मुंह ऊपर उठाकर कान फडफडाने लगा। गीदड ने चिंतित होकर पूछा 'मित्र, यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक हैं?'

गधा आंखें बंद करके मस्त स्वर में बोला 'मेरा दिल गाने का कर रहा हैं। अच्छा भोजन करने के बाद गाना चाहिए। सोच रहा हूं कि ढैंचू राग गाऊं।'

गीदड ने तुरंत चेतावनी दी 'न-न, ऐसा न करना गधे भाई। गाने-वाने का चक्कर मत चलाओ। यह मत भूलो कि हम दोनों यहां चोरी कर रहे हैं। मुसीबत को न्यौता मत दो।'

गधे ने टेढी नजर से गीदड को देखा और बोला 'गीदड भाई, तुम जंगली के जंगली रहे। संगीत के बारे में तुम क्या जानो?'

गीदड ने हाथ जोडे 'मैं संगीत के बारे में कुछ नहीं जानता। केवल अपनी जान बचाना जानता हूं। तुम अपना बेसुरा राग अलापने की जिद छोडो, उसी में हम दोनों की भलाई है।'

गधे ने गीदड की बात का बुरा मानकर हवा में दुलत्ती चलाई और शिकायत करने लगा 'तुमने मेरे राग को बेसुरा कहकर मेरी बेइज्जती की है। हम गधे शुद्ध शास्त्रीय लय में रेंकते हैं। वह मूर्खों की समझ में नहीं आ सकता।'

गीदड बोला 'गधे भाई, मैं मूर्ख जंगली सही, पर एक मित्र के नाते मेरी सलाह मानो। अपना मुंह मत खोलो। बाग के चौकीदार जाग जाएंगे।'

गधा हंसा 'अरे मूर्ख गीदड! मेरा राग सुनकर बाग के चौकीदार तो क्या, बाग का मालिक भी फूलों का हार लेकर आएगा और मेरे गले में डालेगा।'

गीदड ने चतुराई से काम लिया और हाथ जोडकर बोला 'गधे भाई, मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया हैं। तुम महान गायक हो। मैं मूर्ख गीदड भी तुम्हारे गले में डालने के लिए फूलों की माला लाना चाहता हूं। मेरे जाने के दस मिनट बाद ही तुम गाना शुरू करना ताकि मैं गायन समाप्त होने तक फूल मालाएं लेकर लौट सकूं।'

गधे ने गर्व से सहमति में सिर हिलाया। गीदड वहां से सीधा जंगल की ओर भाग गया। गधे ने उसके जाने के कुछ समय बाद मस्त होकर रेंकना शुरू किया। उसके रेंकने की आवाज सुनते ही बाग के चौकीदार जाग गए और उसी ओर लट्ठ लेकर दौडे, जिधर से रेंकने की आवाज आ रही थी। वहां पहुंचते ही गधे को देखकर चौकीदार बोला “यही है वह दुष्ट गधा, जो हमारा बाग चर रहा था।’

बस सारे चौकीदार डंडों के साथ गधे पर पिल पडे। कुछ ही देर में गधा पिट-पिटकर अधमरा गिर पडा।

(सीख: अपने शुभचिन्तकों और हितैषियों की नेक सलाह न मानने का परिणाम बुरा होता है।)

.....

यह कथा सुनाकर सुवर्णसिद्धि बोला, "तुमने भी मेरा कहना नहीं माना। अब अपनी हालत देख लो!”

चक्रधर ने उसाँस भरकर कहा, “तुम ठीक ही कहते हो, भाई। जिसके पास अपनी बुद्धि नहीं होती और जो मित्र की सलाह पर भी नहीं चलता, वह मंथरक नामक जुलाहे की तरह नष्ट हो जाता है।''

सुवर्णसिद्धि ने पूछा, ''मंथरक की क्या कहानी है? ’”

चक्रधर बताने लगा--

अनुवाद - कुलदीप

मंगीउभय गण-पंमउंड्

एक ऐेगी का गणा था। गणे का नाभ था--उद्धउ। वन्ह ष्मिन ठर कपऩें के गह्ठर उणर मे उणर ष्टैने में लगा रन्हउा। ऐेगी ख़्वयं कंस्त्रभ छार नि्रुधी था। ख्रपने गणे के लिए ष्यारे का प्रंग नन्हीं करउा था। गम रात के ष्यरने के लिए एुला ळैन्ह ष्टिउा। निकट में कैरॉ ष्यरागान्ह नी नन्हीं थी। मरीर मे गणा ग्रन्हउ द्भ्बुल न्हे गया था।

एक रात उम गणे की भुलाकाउ एक गीष्ठड़ मे न्नुर्ँ। गीष्ठड़ ने उममे पुळा 'कन्हिए भन्हामय, ख्रप उउने कभन्गेर क्यौँ न्है?'

गणे ने ष्टुाखी ख़्वर में गउाया कि कैमे उमे ष्मिन ठर काभ करना पड़उा न्है। एाने के कुळ नन्हीं ष्मिया एउा। रात के ख्रंणेरे में उणर-उणर भुंन्ह भारना पड़उा न्है।

गीष्ठड़ गैला 'उे भमझे ख्रग ख्रपकी ष्टुपभरी के ष्मिन गए। वन्हॉ पाम में नी एक गड़ा मख्रियें का गाग न्है। वन्हॉ उरन्ह-उरन्ह की मख्रियां उगी न्नुर्ई न्है। एीरे, ककड़ियां, उेरॅ, गान्र, भुली, मलस्भ छार गैगनें की गन्हार न्है। मैंने गाग उेड़कर एक स्गान्ह ख्रंष्टर घुमने का गुप्त भार्ग गना राएा न्है। गम वन्हॉ मे न्र रात ख्रंष्टर घुमकर ळककर एाउा न्नुं छार मेन्हउ गना रन्हा न्नुं। उुभ नी मेरे माथ ख्रया करे।' लार एपकाउा गणा गीष्ठड़ के माथ न्हे गया।

गाग में घुमकर गणे ने भन्हीनें के गाष्ट पन्हली गार न्नरपेट एाना एाया। ष्टैनें रात ठर गाग में नी रन्हे छार पौ ढटने मे पन्हले गीष्ठड़ स्गगल की छार घला गया छार गणा ख्रपने ऐेगी के पाम ख्रा गया।

उसके बाद वे रोज रात को एक जगह मिलते। बाग में घुसते और जी भरकर खाते। धीरे-धीरे गधे का शरीर भरने लगा। उसके बालों में चमक आने लगी और चाल में मस्ती आ गई। वह भुखमरी के दिन बिल्कुल भूल गया। एक रात खूब खाने के बाद गधे की तबीयत मस्ती पर आ गई। वह झूमने लगा और अपना मुंह ऊपर उठाकर कान फड़फड़ाने लगा। गीदड़ ने चिंतित होकर पूछा 'मित्र, यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?'

गधा आंखें बंद करके मस्त स्वर में बोला 'मेरा दिल गाने का कर रहा है। अच्छा भोजन करने के बाद गाना चाहिए। सोच रहा हूं कि ढेंचू राग गाऊं।'

गीदड़ ने तुरंत चेतावनी दी 'न-न, ऐसा न करना गधे भाई। गाने-वाने का चक्कर मत चलाओ। यह मत भूलो कि हम दोनों यहां चोरी कर रहे हैं। मुसीबत को न्यौता मत दो।'

गधे ने टेढ़ी नजर से गीदड़ को देखा और बोला 'गीदड़ भाई, तुम जंगली के जंगली रहे। संगीत के बारे में तुम क्या जानो?'

गीदड़ ने हाथ जोड़े 'मैं संगीत के बारे में कुछ नहीं जानता। केवल अपनी जान बचाना जानता हूं। तुम अपना बेसुरा राग अलापने की ज़िद छोड़ो, उसी में हम दोनों की भलाई है।'

गधे ने गीदड़ की बात का बुरा मानकर हवा में दुलत्ती चलाई और शिकायत करने लगा 'तुमने मेरे राग को बेसुरा कहकर मेरी बेइज़्ज़ती की है। हम गधे शुद्ध शास्त्रीय लय में रेंकते हैं। वह मूर्खों की समझ में नहीं आ सकता।'

गीदड़ बोला 'गधे भाई, मैं तुच्छ जंगली सही, पर एक मित्र के नाते मेरी सलाह मानो। अपना मुंह मत खोलो। बाग के चौकीदार जाग जाएंगे।'

गधा हंसा 'अरे तुच्छ गीदड़! मेरा राग सुनकर बाग के चौकीदार तो क्या, बाग का मालिक भी फूलों का हार लेकर आएगा और मेरे गले में डालेगा।'

गीदड़ ने चतुराई से काम लिया और हाथ जोड़कर बोला 'गधे भाई, मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया है। तुम महान गायक हो। मैं तुच्छ गीदड़ भी तुम्हारे गले में डालने के लिए फूलों की माला लाना चाहता हूं। मेरे जाने के दस मिनट बाद ही तुम गाना शुरू करना ताकि मैं गायन समाप्त होने तक फूल मालाएं लेकर लौट सकूं।'

गधे ने गर्व से सहमति में सिर हिलाया। गीदड़ वहां से सीधा जंगल की ओर भाग गया। गधे ने उसके जाने के कुछ समय बाद मस्त होकर रेंकना शुरू किया। उसके रेंकने की आवाज सुनते ही बाग के चौकीदार जाग गए और उसी ओर लठ लेकर दौड़े, जिधर से रेंकने की आवाज आ रही थी। वहां पहुंचते ही गधे को देखकर चौकीदार बोला “यही है वह दुष्ट गधा, जो हमारा बाग चर रहा था।’

बस सारे चौकीदार डंडों के साथ गधे पर पिल पड़े। कुछ ही देर में गधा पिट-पिटकर अधमरा गिर पड़ा।

(सीख: अपने शुभचिंतकों और हितैषियों की नेक सलाह न मानने का परिणाम बुरा होता है।)

....

यह कथा सुनकर सुवर्णसिद्धि बोला, "तुमने तो मेरा कहना नहीं माना। अब अपनी हालत देख लो!"

चक्रधर ने उसाँस भरकर कहा, "तुम ठीक ही कहते हो, भाई। जिसके पास अपनी बुद्धि नहीं होती और जो मित्र की सलाह पर ही नहीं चलता, वह मंथरक नामक जुलाहे की तरह नष्ट हो जाता है।"

सुवर्णसिद्धि ने पूछा, "मंथरक की क्या कहानी है? '"

चक्रधर कहने लगा--

अनुवाद – कुलदीप धर